# "बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप"

# "Nature of Education in childhood"

परिचय :- इस अवस्था में बालक विद्यालय में जाने लगता है और उसे नवीन अनुभव प्राप्त होते हैं। औपचारिक व अनौपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया के मध्य उसका विकास होता है।
बाल्यावस्था शैक्षिक दृष्टि से बालक के निर्माण की अवस्था है। इस अवस्था में बालक अपना समूह अलग बनाने लगते हैं। इसे चुस्ती की आयु कहते हैं। इस अवस्था में शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार होता है।

ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन ने लिखा है। → "बाल्यावस्था वह समय है, जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोणों मूल्यों और आदर्शों का बहुत सीमा तक निर्माण होता है।"
अतः उसकी शिक्षा का स्वरूप निश्चित करते समय उन्हें निम्नांकित बातों को ध्यान रखना चाहिए —

1— भाषा के ज्ञान पर बल — Emphasis on the Knowle-dge of Lanuage

1— स्ट्रैंग (Strang) के अनुसार — "इस अवस्था में बालकों की भाषा में बहुत रुचि होती है"
अतः इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक है कि बालक भाषा का अधिक — अधिक ज्ञान प्राप्त करे।

(2) जिज्ञासा की सन्तुष्टि (Satisfaction of Curiosity
बालक में जिज्ञासा की सन्तुष्टि करनी चाहिए।

(3) संचय — प्रवृत्ति को प्रोत्साहन ! (Acquisitiveness
संग्रह करने की प्रवृत्ति।
इस अवस्था में संचय करने की प्रवृत्ति होती है वह जिस वस्तु को देखकर उसे अच्छी लगे वह उसे संचय कर लेता है। माता -पिता व शिक्षक का कर्तव्य है कि वह उसे शिक्षाप्रद वस्तुओं को दें।

4 - क्रिया व खेल द्वारा शिक्षा ⇒ (Edu. throug Activity and play) बालक में सीखने की प्रवृत्ति विकसित (Self Activity) स्वयं क्रिया द्वारा करनी चाहिए। (Doing by learning) करके सीखना।

(5) प्रेम व सहानुभूति पर आधारित शिक्षा ⇒ Edu. Based on Love and Sympathy) इस अवस्था में बालक को स्वतन्त्र अनुशासन देना चाहिए। वह उपदेश नहीं सुनना चाहता है। वह धमकियों से नहीं डरता। इसलिए उसे शिक्षा प्रेम व सहानुभूति पर आधारित

(6) संवेगों के प्रदर्शन का अवसर ⇒ Exeursion and Expossition of Emotions) बाल्यावस्था को जीवन का अनोखाकाल संवेगात्मक विकास का माना जाता है। A unique stage in emotional development Colle Brusee — कोल एवं ब्रूस

(7) सामाजिक गुणों का विकास ⇒ Dev. of Social Qualities) किलपैट्रिक ने बाल्यावस्था को "प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण Competitive Socialization) का काल माना है इसलिए स्कूल कालिज में ऐसी क्रियाओं को करवाना चाहिए जो जैसे - अनुशासन, आत्म नियन्त्रण, प्रतिस्पर्धा, सहयोग इत्यादि इस से सामाजिक गुण आते हैं।

(8) रोचक विषय सामग्री - (Interesting Contents) बालकों की रुचियों में परिवर्तनशीलता होती है।

(9) उपयुक्त विषयों का चुनाव - Selections of Subject उन विषयों को चुना जाए जो उसकी पूर्ति कर सके जैसे - भाषा, अंकगणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, ड्राइंग चित्रकला, सुलेख, पत्र लेखन, निबन्ध रचना। इत्यादि

(10) रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था - (Arrangment of Creative Work) बालकों की रचनात्मक कार्यों में रुचि होती है अतः विद्यालयों में रचनात्मक कार्य करने चाहिए।

Scanned with CamScanner

(11) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था । - (Co-Curricular Activities) बालक की विभिन्न मानसिक, शारीरिक और सामाजिक सुप्त शक्तियों का अधिकतम विकास किया जा सकता है। कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यालयों में अधिक से अधिक पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

(12) पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था - Excursion and Scouting) लगभग 9 वर्ष की आयु बालक में निरुद्देश्य इधर उधर घूमने की प्रवृत्ति होती है। उसकी इस प्रवृत्ति को सन्तुष्ट करने के लिए पर्यटन और स्काउटिंग को उसकी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

(13) नैतिक शिक्षा। - (Moral Education)

पियाजे (Piages) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि लगभग 8 वर्ष का बालक अपने नैतिक मूल्यों का निर्माण और समाज के नैतिक नियमों में विश्वास करने लगता है।

(14) पाठ्य-विषय व शिक्षण-विधि में परिवर्तन।

Change in Curriculum and Method Teaching

इस अवस्था में बालक की रुचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। अतः पाठ्य-विषय शिक्षण-विधि में उसकी रुचियों के अनुसार परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। ऐसा न करने से उसमें शिक्षण के प्रति कोई आकर्षण नहीं रह जाता है। फलस्वरूप उसकी मानसिक प्रगति रुक जाती है आदि।

"बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले कारक"

"Factors Affecting Childhood"

बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं — जैसे -

(1) परिवार सम्बन्धी

(Family Factors)

1. भाषा का विकास (Language Development)
2. खेल का विकास (Development of Play)
3. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)
4. सृजनात्मकता का विकास (Development of Creativity)
5. आदतों का विकास (Development of Habits)
6. सामाजिक विकास (Social Development)
7. संवेगात्मक विकास (Emotional Development)
8. मानसिक विकास (Mental Dev.)
9. गामक विकास (Motor Dev.)
10. शारीरिक विकास (Physical Dev.)
11. सांस्कृतिक हस्तान्तरण (Cultural Dev.)
12. नैतिक विकास (Moral Development)
13. वात्सल्य और संरक्षण (Love & Security)

(1) भाषा का विकास

पारिवारिक सम्बन्ध जैसे होंगे बालक वैसी ही भाषा सीखता है परिवार मे शिष्टाचार है तो बालक मे भी शिष्टाचार होगा।

(2) खेल का विकास

खेल के विकास मे माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जैसे साधन होंगे वैसा खेल का वि० होगा।

(3) मानसिक स्वास्थ

परिवार बालक के मानसिक स्वास्थ पर बहुमुखी प्रभाव डालता है यदि परिवार मे अलगाव की भावना है तो बालक मे भी अलगाव की भावना विकसित होगी।

(4) सृजनात्मकता का विकास

परिवार द्वारा यदि बालक में स्वास्थ्य सामाजिक अभिवृत्तियों का संचार किया जाता है तो बालक की सृजनात्मकता शक्ति का विकास होता है।
उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि बालक के विकास में परिवार की भूमिका स्पष्ट होती है। परिवार से सम्बन्धित निम्नलिखित कारक ही बालकों के विकास में परिवार की सबसे अहम भूमिका होती है।
1 – परिवार में निवास स्थान
2 – परिवार के सदस्यों का व्यवहार, आचरण और भाषा।
3 – परिवार के सदस्यों की शैक्षिक पृष्ठभूमि।
4 – परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति।
5 – परिवार का आकार।
6 – परिवार के नैतिक आदर्श और मूल्य।
7 – माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों का बालक के साथ व्यवहार व अनुक्रिया।
(8) परिवार का आन्तरिक वातावरण
(9) परिवार में बालकों के लालन-पोषण का तरीका। आदि।

(5) आदतों का विकास

माता-पिता एवं शिक्षक बालकों में अच्छी आदतों का विकास करना चाहते हैं जैसे- उठना-बैठना, चलना-फिरना, भोजन करना, बातचीत करना, अच्छा व्यवहार करना, स्नान करना, स्वच्छता रखना, आदि आदतों का विकास करना चाहते हैं।

(6) सामाजिक विकास

माता-पिता द्वारा बालक के पालन-पोषण की विधि उनके सामाजिक विकास पर बहुत गहरा प्रभाव डालती है, अत्यधिक लाड़-प्यार से पाला जाने वाला बालक दूसरे बालकों से दूर रहना पसन्द करता है। परिवार के बड़े लोगों का जैसा व्यवहार होगा बालक वैसा ही सीखता है।

(7) संवेगात्मक विकास

पारिवारिक वातावरण बालक के संवेगात्मक विकास पर अत्यधिक प्रभाव डालता है जिन परिवारों में आपसी कलह, लड़ाई, झगड़े, द्वेष आदि होता है वहां बालक का सकारात्मक संवेगात्मक विकास नहीं होता है जहां सुरक्षा, शान्ति तथा आनन्द मिलता है वहां संवेगात्मक विकास होता है माता-पिता का व्यवहार संवेगात्मकता को

बढ़ा सकता है व घटा सकता है। कठोर नियन्त्रण से बच्चे अन्तर्मुखी व दब्बू बन जाते हैं। पक्षपाती माता पिता और संतान ईर्ष्यालू होते हैं।

(8) मानसिक विकास

परिवार के वातावरण का बालक के मानसिक विकास से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। कुप्पुस्वामी के अनुसार – "एक अच्छा परिवार, जिसमे माता-पिता मे अच्छे सम्बन्ध होते है। जिसमे वे अपने बच्चो की रुचियो व आवश्यकताओं को समझते है एवं जिसमें आनन्द और स्वतंत्रता का वातावरण होता है। प्रत्येक सदस्य के मानसिक विकास मे अत्यधिक योगदान देता।" माता-पिता की बौद्धिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का बच्चे की मानसिक योग्यता से निश्चित रूप से सम्बन्ध होता है।

(9) गामक विकास (Motor Dev.)

बालक के गामक विकास में माता-पिता और परिवार के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक के खान-पान तथा आहार उसके गामक विकास को प्रभावित करते है। व्यायाम, खेलकूद और मॉलिश का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। टीकाकरण कराना भी।

(10) शारीरिक विकास Physical Dev.

परिवार यदि बालक के लालन-पोषण की व्यवस्था ऐसे स्थान पर करता है जहां शुद्ध वायु, पर्याप्त धूप, प्रकाश, स्वच्छता की व्यवस्था न हो तो बालक का शारीरिक स्वास्थ्य रहता है। पौष्टिक और सन्तुलित आहार उपलब्ध कराकर, नियमित दिनचर्या, बिताने की आदत डालकर, थकान दूर करने के लिये विश्राम और निद्रा

(11) सांस्कृतिक हस्तान्तरण

बालक मे सांस्कृतिक हस्तान्तरण माता-पिता व शिक्षक द्वारा अच्छे संस्कार होना चाहिए। वंशानुक्रम व वातावरण अगर ठीक है तो संस्कार भी ठीक होंगे।

(12) नैतिक विकास

बालक मे नैतिक विकास माता पिता के व सामाजिक विकास के द्वारा नैतिक विकास होता है जैसे – पैर छूना, बड़ो को इज्जत करना

(13) वात्सल्य और संरक्षण

मातृ-वात्सल्य और पैतृक संरक्षण बालक को परिवार मे ही प्राप्त होता है।